विस्तार पत्रक-NRCC/2017-2

गर्भवती ऊँटनी व उसके नवजात बच्चों की समुचित देखभाल

राकेश रंजन, संजय कुमार, काशीनाथ, राजेश कुमार सांवल
एवं एन.वी.पाटिल

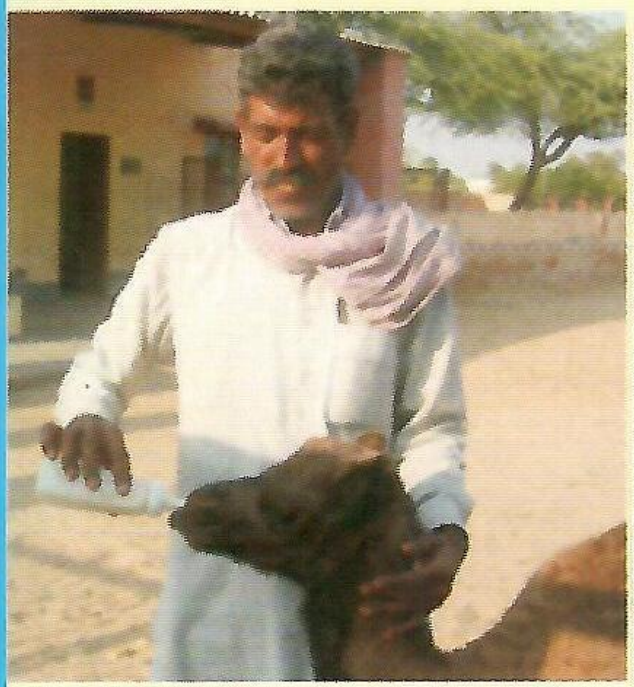

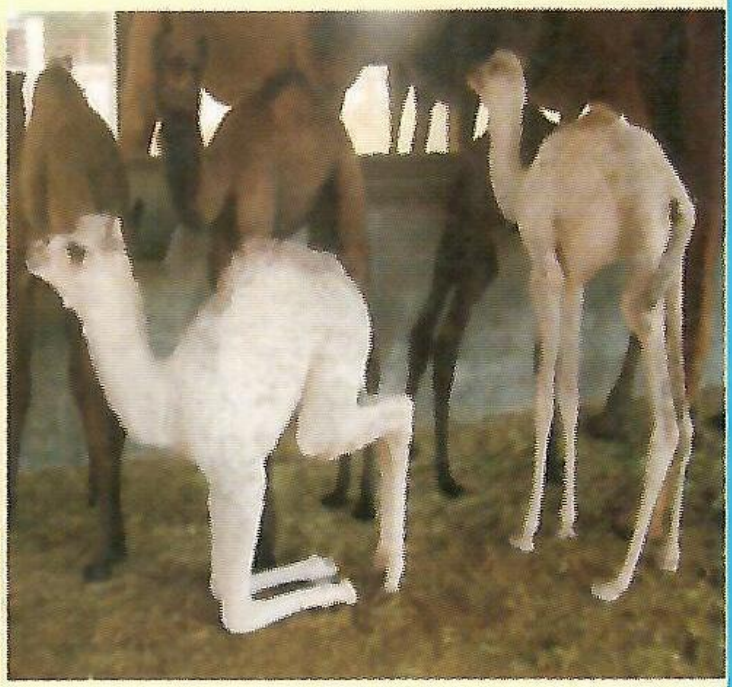

भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर
334001 (राजस्थान)

गर्भ काल लम्बा (लगभग 13 महीने) होने के कारण ऊँटों की प्रजनन दर धीमी होती है और एक ऊँटनी तकरीबन दो साल में एक बच्चे को जन्म देती है । साथ ही जन्म के बाद 10 से 25 प्रतिशत तक बच्चे अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं जिससे ऊँट पालकों को काफी आर्थिक नुकसान ऊठाना पड़ता है। यदि ऊँट पालक कुछ बातों का ध्यान रखें तो इस मृत्यु दर को कम कर इससे होने वाले नुकसान से बचा जा सकता है।

जन्म से पहले

स्वस्थ बच्चे के जन्म के लिए यह आवश्यक है कि गर्भावस्था के दौरान ऊँटनियों की समुचित देखभाल की जाए। इसके लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें :

1. गर्भवती ऊँटनियों की खुराक का विशेष ख्याल रखें। पर्याप्त मात्रा में चारा और दाना डालें। विशेषज्ञों की सलाह लेकर दाना, खनिज लवणों और विटामिन युक्त मिश्रण प्रतिदिन दें।

2. गर्भवती ऊँटनियों को वयस्क नर ऊँटों के साथ कभी न रखें। गर्भ के अंतिम चार महीनों में गर्भवती ऊँटनियों के रहने और खाने की व्यवस्था टोले से अलग करें। हो सके तो उन्हें दूर न भेजकर पास के खेत या ढाणी में चरने दें। अधिक ऊँची या गहरी जगहों पर न भेजें।

3. प्रसव के करीब एक हफ्ते पूर्व ऊँटनी के रहने के स्थान की अच्छी तरह से सफाई करें। जमीन और दीवारों पर फिनॉइल का छिड़काव करें। ब्राह्य परजीवियों की समस्या हो तो डेल्टा–मेथ्रिन या अन्य कीटनाशक दवा पानी में मिलाकर छिडकें या ऊँटनी को लाने के पहले जमीन पर पुवाल डालकर आग लगा दें।

4. यदि ऊँटनियों के टोले के आस पास घोड़े, भेड़ या बकरी भी रहते हों या पूर्व में किसी बच्चे को टेटनस हुआ हो तो संभावित प्रसव काल के एक माह पूर्व टेटनस का टीका (टेटनस टॉक्सवाइड) पशु चिकित्सक की सलाह पर ऊँटनी को लगवा लें।

जन्म के दौरान

प्रसव के दौरान ऊँट पालन से सम्बंधित किसी अनुभवी व्यक्ति का पास रहना अच्छा है। प्रसव के दौरान निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए :

1. आमतौर पर ऊँटनी को प्रसव के दौरान किसी सहायता की आवश्यकता नहीं होती है और बच्चा प्रसव शुरू होने के दस से तीस मिनट तक स्वतः बाहर आ जाता है। यदि बच्चे को बाहर आने में देर हो रही हो तो डेटोल या लाल दवा (पोटैशियम परमैंगनेट) से अच्छी तरह हाथ धोकर ऊँटनी की सहायता करें। इस बात का खास ख्याल रखें कि बच्चेदानी और जननांगो को नाखून या किसी अन्य चीज से नुकसान न पहुंचे।

2. बच्चा माँ के पेट में त्वचा की एक थैली में बंद रहता है जो बच्चे के बाहर आने के बाद फट जाती है। यदि ये थैली बच्चे के बाहर आने के बाद भी न खुले तो बच्चे का दम घुट सकता

है। अतः उसे सावधानी से खोलकर बच्चे को बाहर निकालें।

3. बच्चे के नाड़े (नाल) को करीब चार से पांच इंच की दूरी पर एक मोटे सूती धागे से बांध दें। पहली गांठ से दो इंच की दूरी पर दूसरी गांठ लगाएं। फिर दोनो गांठों के बीच नाड़े को नए सेविंग ब्लेड या साफ कैंची की मदद से काट दें। नाड़े के कटे हिस्से पर टिंचर आयोडीन या डेटॉल लगाएं। नाड़े को पूरी तरह सूखने तक प्रतिदिन उसकी डेटोल से सफाई करते रहें।

4. जन्म के तुरंत बाद साफ सूती कपड़े से बच्चे की नाक की तथा फिर सारे शरीर की सफाई करें। यदि वातावरण में काफी ठण्ड हो तो आवश्यकतानुसार आग जलाकर गर्मी दें। बच्चे को ऐसे स्थान में रखें जहां ठंडी हवा न चल रही हो।

जन्म के बाद

जन्म के बाद पहले एक दो महीने तक बच्चे को खास देखभाल की जरुरत होती है।

है। अतः उसे सावधानी से खोलकर बच्चे को बाहर निकालें।

3. बच्चे के नाड़े (नाल) को करीब चार से पांच इंच की दूरी पर एक मोटे सूती धागे से बांध दें। पहली गांठ से दो इंच की दूरी पर दूसरी गांठ लगाएं। फिर दोनो गांठों के बीच नाड़े को नए सेविंग ब्लेड या साफ कैंची की मदद से काट दें। नाड़े के कटे हिस्से पर टिंचर आयोडीन या डेटॉल लगाएं। नाड़े को पूरी तरह सूखने तक प्रतिदिन उसकी डेटोल से सफाई करते रहें।

4. जन्म के तुरंत बाद साफ सूती कपड़े से बच्चे की नाक की तथा फिर सारे शरीर की सफाई करें। यदि वातावरण में काफी ठण्ड हो तो आवश्यकतानुसार आग जलाकर गर्मी दें। बच्चे को ऐसे स्थान में रखें जहां ठंडी हवा न चल रही हो।

जन्म के बाद

जन्म के बाद पहले एक दो महीने तक बच्चे को खास देखभाल की जरुरत होती है।

एक या दो थनों का खीस ही पीने दें। ज्यादा खीस पीने से बच्चे को दस्त भी लग सकता है। यदि बच्चा पहले तीन से चार हफ्ते पूरे समय माँ के साथ रहता है और थोड़ी–थोड़ी मात्रा में दूध पीता रहता है तो दस्त होने का खतरा कम रहता है।

4. बच्चे को एक माह तक केवल माँ का दूध ही पीने दें। साथ ही बच्चे को थोड़ी देर के लिए माँ के साथ घुमने दें। लगभग तीन माह के पश्चात बच्चा थोड़ा–थोड़ा घास चरने लग जाता है।

5. प्रसव के बाद पहले चार पांच महीने ऊँटनी के चारे एवं दाने का खास ख्याल रखा जाना चाहिए। यदि हरा चारा उपलब्ध न हो तो ऊँटनी को विटामिन ए (तीस लाख यूनिट) का इंजेक्शन तीन दिनों तक प्रतिदिन लगवाएं।

6. छह माह की उम्र पर बच्चे को पेट के कीड़े मारने की दवा (अल्बेनडाजोल 600 मिली ग्राम की एक गोली एक बार) दें।

साथ ही डॉक्टर की सलाह पर तिबरसा (सर्रा) रोग से बचने का टीका भी लगवाया जा सकता है।

7. जब बच्चा लगभग 12 से 18 महीने का हो जाए तो माँ का दूध पिलाना बंद कर उसे माँ से अलग कर सकते हैं। इसके बाद उसे टोले के साथ चरने के लिए भेजना शुरू करें।

स्वस्थ टोरडियों के लक्षण

1. जन्म के समय वजन 27 से 50 (औसतन 37 से 38) किलो ग्राम
2. जन्म के पहले 3 घंटों के अन्दर अपने पैरों पर खड़ा हो जाना
3. जन्म के 24 घंटे के अंदर पहली बारं मल त्याग देना
4. जन्म के 2 से 3 दिनों के अंदर चलने लगना
5. जन्म के एक सप्ताह के अंदर अपनी माता के पीछे–पीछे चलने लगना
6. जन्म के 2 से 3 महीनों के बाद थोड़ी–थोड़ी घास चरने लगना
7. सतर्क रहना, भागना, कूदना और दूसरे टोरडियों व अपनी माता के साथ घूमना

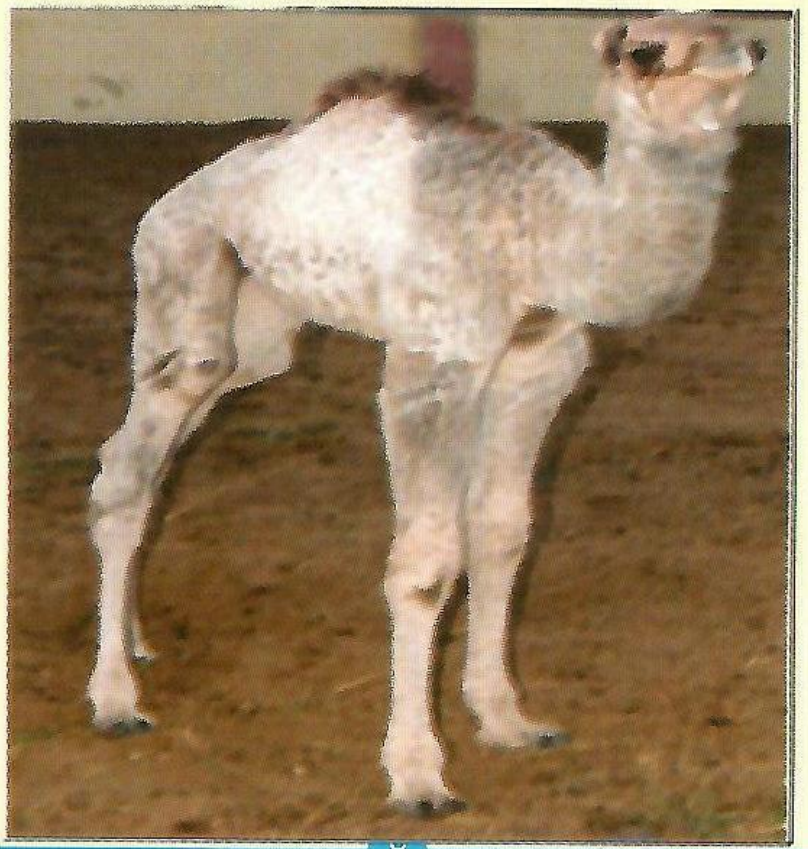

बीमार टोरडियों के लक्षण

1. सुस्त रहना, अपनी माता से दूर शांत बैठे रहना
2. दूध पीने में रुचि न दिखाना
3. शरीर का ज्यादा गर्म या ठंडा होना
4. आंखों से पानी आना
5. मल–मूत्र न त्यागना

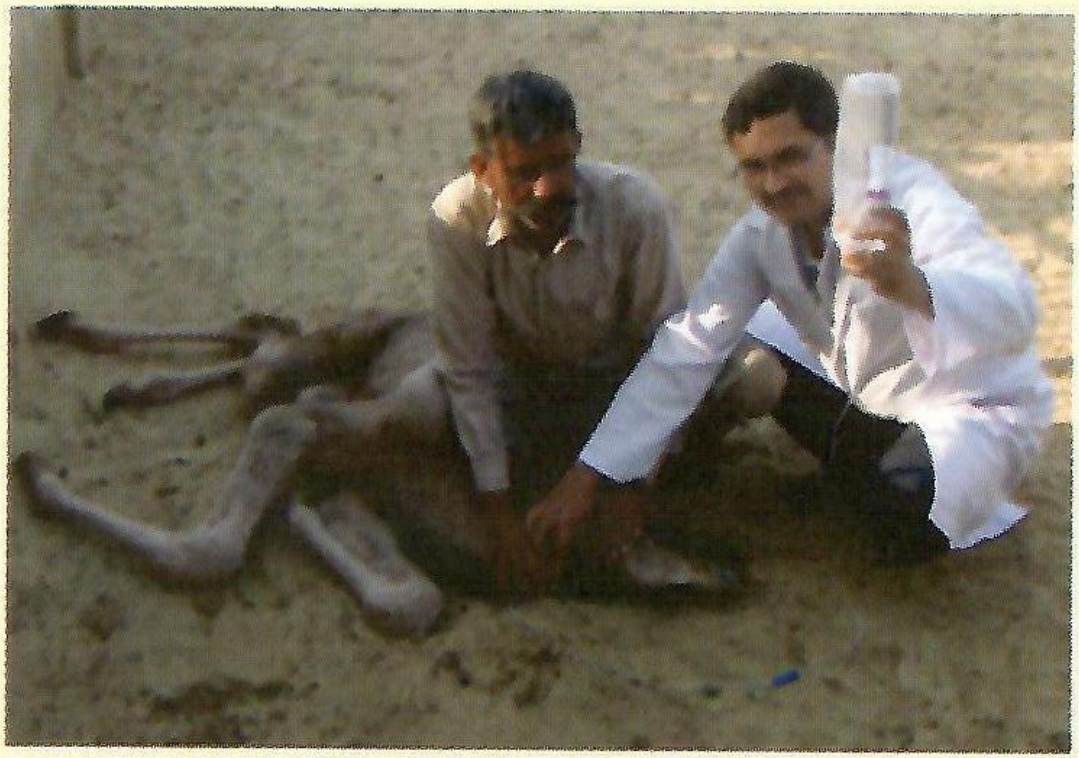

बच्चों में होने वाली प्रमुख बीमारियाँ और उनका बचाव

1. दस्त : ऊँट के नवजात बच्चों में होनेवाली यह सबसे जानलेवा बीमारी है । दस्त लगने पर पांच चम्मच चीनी और एक चम्मच नमक दो लीटर पानी में घोलकर रख ले और

करीब आधा लीटर घोल हर चार घंटे पर पिलाते रहें। याद रखें, शरीर में पानी की कमी दस्त के दौरान मृत्यु का प्रमुख कारण है। ऐसा पाया गया है कि छोटे बच्चे में संक्रमण ज्यादातर बड़े बच्चों के मल–मूत्र से आते हैं। बीमार बच्चे को अलग जगह पर रखें तथा उसे अधिक ठण्ड या गर्मी से बचाएं। पशु चिकित्सक से संपर्क कर इलाज की तुरंत व्यवस्था करे ।

2. ब्राह्य परजीवी : ये खून चूसने के साथ–साथ कई तरह के रोग भी फैलाते हैं। इनके निवारण के लिए डॉक्टर की सलाह पर उचित उपचार करें।

3. पेट के कीड़ें : इनके संक्रमण से पाचन तंत्र कमजोर पड़ जाता है और बच्चों में शारीरिक दुर्बलता आ जाती है। पेट के कीड़ें मारने की दवा उचित अंतराल पर नियमित रूप से देते रहना चाहिए।

4. ठंड या गर्मी का प्रकोप : बच्चे में बड़ों की तुलना में ठंड या गर्मी सहने की क्षमता कम होती है। अतः इस बात का ख्याल रखें कि कम उम्र के बच्चों को गर्मी के दिनों में दोपहर और ठंड के दिनों में रात में रहने की समुचित व्यवस्था हो।

प्रकाशक :–
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
लेखक राकेश रंजन, संजय कुमार, काशीनाथ, राजेश कुमार सांवल एवं एन.वी.पाटिल
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर 334001 (राजस्थान)
दूरभाष : 0151: 2230183 फैक्स : 0151: 2970153